आदर्श प्रश्न पत्र - 4

हिन्दी (व्याकरण)

कक्षा - 9

समय : 45 मिनट अंक : 25

उत्तरकुंजी

1. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग अनिश्चित संखयावाचक तथा अनिश्चित परिमाणवाचक के रुप में कीजिए: 4

   1. बहुत
      - आज मैंने बहुत से केले खाए । - अनिश्चित संख्यावाचक
      - माँ ने बहुत से चावल बनाए। - अनिश्चित परिमाणवाचक
   2. कुछ
      - आज हमारे घर खाने पर कुछ लोग आएँगे। - अनिश्चित संख्यावाचक
      - खीर में डालने के लिए कुछ चीनी दो। - अनिश्चित परिमाणवाचक

2. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए : 3

   1. मोहन ने कार्ड छपवाए शादी के लिए। (मिश्र वाक्य)

      उत्तर : मोहन ने कार्ड छपवाए वे शादी के लिए थे।

   2. नीचे गिरने के कारण गिलास टूट गया। (संयुक्त वाक्य)

      उत्तर : गिलास नीचे गिरा और टूट गया।

   3. जो गरीब हैं उनकी कोई नहीं सुनता । (सरल वाक्य)

      उत्तर : गरीबों की कोई नहीं सुनता।

3. निम्नलिखित वाक्यों में सर्वनाम और विशेषण को अलग कीजिए । 3

		सर्वनाम	विशेषण
1	उसका प्रवचन मधुर है।	उसका	मधुर
2	मुझे थोड़ा पानी पिलाओ।	मुझे	थोड़ा
3	तुम्हारे पास सैकड़ौ रुपये हैं।	तुम्हारे	सैकड़ौ

4. निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया का काल पहचानिए : 3

- हमने अभी-अभी भोजन किया है। - आसन्न भूत काल
- अजय गीत गा रहा था । - अपूर्ण भूत काल
- अमर मिठाई खाता होगा। - संदिग्ध वर्तमान काल

5. दिए गए वाक्यों के लिंग बदलकर एक नया वाक्य बनाइए : 2

- यह लड़का गुणवान है।
  उत्तर : यह लड़की गुणवती है।

- ये अध्यापक अत्यंत बुद्धिमान हैं।
  उत्तर : ये अध्यापिका अत्यंत बुद्धिमती हैं।

6. निम्नलिखित समस्तपद का विग्रह करके समास का भेद लिखिए : 3

- तुलसीकृत - तुलसी द्वारा कृत - करण तत्पुरुष
- यथासमय - समय के अनुसार - अव्ययीभाव समास
- नीलगाय - नीली है जो गाय - कर्मधारय समास

7. निम्नलिखित विषय पर निबंध लिखिए- 7

मेरा प्रिय मित्र

मित्रता जीवन का अमूल्य धन है। सच्चा मित्र मिलना बड़े सौभाग्य की बात है। मैं भाग्यशाली हूँ कि मुझे ऐसे कई मित्र मिले हैं किंतु उनमें मुझे सबसे अधिक प्रिय है - अभिनव अग्रवाल।

अभिनव का घर मेरी कॉलोनी में ही स्तिथ है। उसके पिता श्री ब्रजभूषण अग्रवाल एक सफल व्यवसायी हैं। उसकी माता श्रीमती नीलम शिक्षित गृहिणी हैं। अभिनव मेरा सहपाठी भी है। उसमें अनेक गुण हैं। जैसे माता-पिता और गुरूजन की आज्ञा का पालन करना, बड़ों का सम्मान करना, समवयस्कों से स्नेहपूर्ण व्यवहार करना आदि। इसी कारण वह विदयालय में भी सबकी आँखों का तारा है।

अभिनव सदा दूसरों की सेवा और सहायता के लिए तत्पर रहता है।

अभिनव मेरा सबसे प्रिय मित्र कैसे बना, इसकी एक रोचक कथा है। जब मैं चौथी कक्षा में था तो गणित अध्यापिका द्वारा दंड दिए जाने के बाद, मैं उनकी नकल बना रहा था। यह देखकर अभिनव बहुत दुखी हुआ और उसने मुझे समझाया कि यदि हम अपने गुरूजन का आदर नहीं करेंगे, तो उनसे कभी कुछ नहीं सीख पाएँगे। कुछ पाने के लिए झुकना आवश्यक होता है। उसने यह भी कहा कि यदि मैं फिर ऐसा करुँगा तो वह मुझसे मित्रता नहीं रखेंगा। मैंने उसे खोना ठीक नहीं समझा। आज मुझे गर्व है कि मेरा मित्र केवल अच्छे कार्यों में ही मेरा साथी नहीं है, अपितु मुझे बुरे मार्ग पर जाने से भी रोकता है।

हम दोनों केवल मित्र ही नहीं, प्रतिद्वंदवी भी हैं। होड़ लगाकर पढ़ते और खेलते हैं। सचमुच, भाई जैसा मित्र पाना मेरे लिए गौरव का विषय है।